शब्दिता

समकालीन चिन्तन एवं सृजन की संवाहिका

जुलाई-दिसम्बर, 2018, वर्ष-7, अंक-14

Scanned by CamScanner

शब्दिता

[illegible] चिन्तन एवं सृजन की संवाहिका

जुलाई-दिसम्बर, 2018, वर्ष-7, अंक-14

R.N.I. No. UPHIN/2012/41551

ISSN No. 2278-1498

संरक्षक एवं प्रधान संपादक

डॉ. रामकठिन सिंह

संपादक

डॉ. कमलेश राय

नेफोर्ड प्रकाशन, अलीगंज, लखनऊ

Scanned by CamScanner

शब्दिता

समकालीन चिन्तन एवं सृजन की संवाहिका

जुलाई-दिसम्बर, 2018, वर्ष-7, अंक-14

शब्दिता की डायरी/4 — डॉ. रामकठिन सिंह
संपादकीय/5 — डॉ. कमलेश राय

पुनर्पाठ
नपनी/8 — दूधनाथ सिंह

आलेख
कब्रिस्तान में पंचायत : संवेदनाओं के साक्ष्य/13 — डॉ. पी.एन. सिंह

मुलाकात
अलकनंदा की उदासी/19 — विपिन तिवारी

बातचीत
विचारधारा का विरोध विचार का विरोध नहीं है/22 — हारून रशीद खान

आलेख
हिन्दी की संवैधानिक पड़ताल/25 — कन्हैया सिंह
बालमुकुंद गुप्त के व्यंग्य और विनोद/28 — गोपाल प्रधान
मल्टीप्लेक्स संस्कृति और हिन्दी सिनेमा/33 — सत्यदेव त्रिपाठी
पूर्वांचल का लुप्तप्राय लोकनाट्य : बटोहिया/38 — डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी
रचना का प्रथम पाठक/42 — अजित कुमार राय

व्यंग्य
जन्नत में तशद्दुद/46 — महेश चन्द्र द्विवेदी

कविताएँ/बाल कविताएँ
कौशल किशोर/48, रामधारी सिंह 'दिनकर'/99, सोहन लाल द्विवेदी/99

गीत/नवगीत/बाल गीत
कुमार रवीन्द्र/49, गुलाब सिंह/51, मधुकर अष्ठाना/52, डॉ. रामकठिन सिंह/70, नचिकेता/86

गज़लें
हरिनारायण हरीश/53, डी.एम. मिश्र/54

उपन्यास का अंश
बड़की बारी/55 — रामदरश मिश्र

कहानियाँ
ढलती बहारें/60 — शाइस्ता फाख़री
सपनों का सिनेमा/64 — दयानंद पाण्डेय
सरकारी स्वेटर/68 — स्वाति गौतम

संस्मरण
लू शुन के देश में/71 — शिवमूर्ति
स्वतन्त्रता-संग्राम के अप्रतिम योद्धा : पद्मनाथ सिंह/76 — डॉ. रामकठिन सिंह
जिन्दगीनामा उर्फ गाँव की पड़ताल/79 — देवनाथ द्विवेदी

सृजन संदर्भ
नचिकेता के गीतों में मधुमास/83 — श्रीधर मिश्र

समीक्षा
लपट है जिनके भीतर /87 — अनिल अविश्रान्त
रचना-चिन्तन के बहाने.../90 — डॉ. लव कुमार

लोकार्पण रपट
अचम्भित करने वाली बौद्धिक सक्रियता/93 — डॉ. संदीप कुमार सिंह

शोध पत्र
सीताकांत महापात्रा की कविताः संभावित तथ्यों का प्रकटन/95 — नम्रता शुक्ल

रपट
एक जन बुद्धिधर्मी की यात्रा/100 — माधव कृष्ण

घोषणा पत्र/102, चिट्ठियाँ/103, पते/104

Scanned by CamScanner

बिपिन तिवारी

अलकनंदा की उदासी

नामवर जी से मिलना

'संवेद' पत्रिका ने अमृतलाल नागरजी पर जब विशेषांक निकालने की योजना बनाई तो लेखकों की सूची में नामवर जी शीर्षस्थ थे। सोचा, नामवरजी अमृतलाल नागर के साहित्य पर यदि बात करेंगे तो विशेषांक के लिए अच्छा होगा। विशेषांक समृद्ध होगा। पाठकों को नामवरजी के नागरजी को लेकर विचार जानने को मिलेंगे। जन्मशताब्दी वर्ष के दौरान मुख्य-धारा की किसी पत्रिका ने अमृतलाल नागर पर न तो विशेषांक निकाला और न ही उन पर नए सिरे से बात की। यह बात और है कि 'आजकल' और 'समकालीन भारतीय साहित्य' पत्रिका ने रस्म जरूर निभाई। नामवरजी से लेख लिखवाने की उम्मीद तो लोग-बाग कब की छोड़ चुके हैं सो मुझे भी नहीं थी।

वैसे भी नामवर जी वाचिक परंपरा के आलोचक हैं तो इसी वाचिकता से थोड़ी उम्मीद थी कि नागरजी के बारे में बातचीत करेंगे तो बेहतर होगा। लेकिन सच्चाई यह भी पता थी कि नामवरजी की अवस्था नहीं है। वह इसके लिए भी तैयार होंगे? या हो पाएँगे? फिर भी डरते-डरते अप्रैल 2017 की किसी सुबह फोन किया, 'संवेद' के अमृतलाल नागर विशेषांक के बारे में बताया। नामवरजी सुनते रहे फिर उन्होंने कहा, बेटा मुझे अब छोड़ दो- उनकी आवाज बेहद थकी हुई थी। ऐसा लगा जैसे कहना/करना चाहते हैं पर कह/कर नहीं पा रहे। वैसे नामवरजी से बातचीत करना इतना आसान नहीं है फिर भी मैं चाहता था कि यह जोखिम उठाऊँ। बाद के दिनों में नामवर जी के स्वास्थ्य को लेकर बहुत सी बातें सुनने को और पढ़ने को मिलीं। 'तद्भव' 36 में सिद्धार्थ सिंह ने 'नामवर सिंह और नामवर बाबू जी...' संस्मरण में नामवरजी की वर्तमान स्थिति का जो उल्लेख किया है, वह दिल भरने वाला है। जब वह अपने प्रिय भतीजे सिद्धार्थ सिंह को मुश्किल से पहचान पाए। कई बार याद दिलाने पर जब पहचानते हैं तो छोटे-छोटे कदमों से चलते हुए बस यही कहते हैं- 'मेरा मंटू आ गया...।'

कुछ ऐसी ही राय दूसरे लोगों की भी है। कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह जी ने अंक की योजना और अमृतलाल नागर जी पर साक्षात्कार देने के दौरान कहा था कि अंक जब प्रकाशित होकर आ जाए तो मैं तुमको लेकर नामवर जी के यहाँ चलूँगा। 'संवेद' अमृतलाल नागर जी पर केन्द्रित अंक देखकर नामवरजी को अच्छा लगेगा। बिस्मिल्लाह सर ने बताया कि नामवरजी जिन कुछ लोगों को आवाज से पहचानते है उसमें एक आवाज मेरी भी है।

Scanned by CamScanner

मेरे मन में इस बात को लेकर उत्साह था कि यदि ऐसा हो पाए तो अच्छा रहेगा। इसी बहाने सही नामवरजी को देखने, सुनने,जानने का मौका मिलेगा। लेकिन इसका संयोग नहीं बना। दिल्ली गया लेकिन समय की कमी और गर्मी की वजह से बिस्मिल्लाह सर से भी नहीं मिल पाया। इस बात का अफसोस है। लखनऊ में 'संवेद' का अमृतलाल नागर पर केन्द्रित अंक का विमोचन कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद दिल्ली आने की योजना थी। सो आने से पहले मैं अपने गुरु कथाकार देवेन्द्र जी से मिलने घर गया। उन्होंने पूछा दिल्ली में कब तक रहने की योजना है? क्या करोगे इतने दिन रहकर? मैंने बताया कि 'अमृतलाल नागर पर केन्द्रित' विशेषांक लेखकों को भेजना है और कुछ बड़े लेखकों को घर जाकर विशेषांक भेंट करना है। पूछने पर कई बड़े लेखकों के नाम बताए। नामवरजी का जिक्र आने पर उन्होंने कहा, नामवरजी के यहाँ जाना तो मेरा नया कहानी संग्रह **'समय बे-समय'** भी दे देना। सो डरते-डरते नामवरजी के यहाँ जाने की योजना बनाई। डर इस बात का था कि कहीं नामवरजी गेट से ही मना न करा दें, न पहचान पायें। मैं दिल्ली छोड़ने से पहले कई बार नामवरजी से मिल चुका था पर अब उसकी याद बाकी होने की उम्मीद न थी। उम्र ने नामवरजी को भी नहीं छोड़ा।

एक समय था जब हर छोटा-बड़ा रचनाकार अपनी रचना पर नामवरजी की राय जानने की आकांक्षा रखता था। इनमें नामचीन से लेकर अभी साहित्य का ककहरा सीख रहे युवा रचनाकार भी शामिल रहे हैं। आज उन्हीं नामवरजी पर लोग-बाग आरोप लगा रहे हैं कि एनडीटीवी की बातचीत में नामवरजी ने कई बार ईश्वर का नाम लिया, अंततः वह भी उसी ईश्वर की शरण में चले गए। सोशल साइट्स पर खूब टिप्पणियाँ लिखी गईं। कुछ ने खारिज किया कुछ ने समर्थन। नामवरजी ने बातचीत में ईश्वर के सम्बन्ध में कहा था- 'मेरा ईश्वर किसी से कमजोर है क्या?' इस वाक्य को बार-बार उछाला गया। वैसे धर्म और ईश्वर को एक मानने की परंपरा चलती रही है। लोग इस फर्क को समझना नहीं चाहते कि धर्म के खिलाफ तो बहुत से आंदोलन आपको दुनिया भर में मिलते हैं, पर ईश्वर के खिलाफ क्या कोई आंदोलन चला है? मार्क्स ने धर्म को नशा कहा है। वैसे मेरी धर्म और ईश्वर में कोई आस्था नहीं है। फिर भी मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि ईश्वर को मानना ही धर्म को मानना है। कभी दुःखी होने पर हे भगवान, शब्द जरूर निकल जाता है। इससे मुझे कोई आपत्ति नहीं है। कभी ईश्वर को लेकर मजाक भी कर लेता हूँ। इसके बावजूद मैं ईश्वर को लेकर नामवरजी ने जो बात कही, उसका समर्थन या विरोध नहीं कर पाता। घोर से घोर नास्तिक व्यक्ति भी दुःख के क्षणों में किसी न किसी को याद करता होगा। अंतर ईश्वर के नाम को लेकर है। ईश्वर मतलब सही रास्ता दिखाने वाला, कोई पथ प्रदर्शक। जैसा कभी गोर्की ने तोलस्तोय के लिए कहा था। खैर यहाँ विषयान्तर हो रहा हूँ सो यहीं अपने को रोकता हूँ।

नामवरजी के यहाँ जाने को लेकर दिमागी उहापोह से अपने को निकालते हुए मैं 31 मई 2018 को **32 ए शिवालिक अपार्टमेंट अलकनंदा, कालकाजी** पहुँच गया। सुबह के सवा दस बज रहे थे। सूरज का ताप बढ़ रहा था। सोचा था अभी नामवरजी अपने पढ़ने की तैयारी कर रहे होंगे या पढ़ रहे होंगे। नामवरजी शिवालिक अपार्टमेंट में दूसरी मंजिल पर रहते हैं। इसके बारे में उन्होंने कई जगह किस्सा सुनाया है कि उनका फ्लैट सबसे ऊपर की मंजिल पर है जहाँ से वह सबको देखते हैं। कोई उनको देख नहीं सकता। वैसे यह बात वह हँसी में कहते हैं। यही बात साहित्य में उनकी स्थिति की है। वह अपना भाषण देते हैं और चल देते हैं। मंच लूटना जानते हैं। उनका सीधा सा तर्क है दूसरों को कम सुनो, नहीं तो अपनी राय बनाने में दिक्कत आती है। नामवरजी रचना का जब विश्लेषण करते हैं तो बड़े से बड़े रचनाकार से भी अप्रभावित रहकर। वह चाहे भीष्म साहनी के बारे में बात कर रहे हों या फिर अमृतलाल नागर पर। भीष्म साहनी के साहित्य पर विचार करते हुए एक बार उन्होंने कहा था कि भीष्म साहनी के साहित्य की तुलना में कृष्णा सोबती के साहित्य में जीवंतता ज्यादा है। उसका कारण पंजाबी भाषा का प्रभाव है। भीष्म साहनी खड़ी बोली हिन्दी में लिखते हैं। पंजाबी के प्रभाव से अपने को अलगाए रखते हैं जबकि कृष्णा सोबती पंजाबी की टेक नहीं छोड़ती। उर्दू मिश्रित पंजाबी खड़ी बोली हिन्दी में जान डाल देती है। यह बात उन्होंने तब कही जब भीष्म साहनी साहित्य में एक हस्ती बन चुके थे। विभाजन पर **'तमस'** जैसा उपन्यास प्रकाशित हो चुका था। **'चीफ की दावत', 'ओ हरामजादे', 'अमृतसर आ गया है'** आदि कहानियाँ लोकप्रिय हो चुकी थीं। ऐसे नामवरजी रहे हैं। अगर नामवरजी कोई बात कहते थे तो उसका तब गंभीर अर्थ होता था। यह बात मैं आज के नामवरजी के बारे में नहीं कर रहा हूँ। जहाँ वह अधिकांश कवियों को मुक्तिबोध की टक्कर का कवि बता देते हैं । वैसे यह आशीर्वाद है इसमें और कुछ नहीं। जैसे बाबा का होता है । वैसे इसे लोग किसी और तरह से भी समझने का प्रयास करेंगे और करते भी रहे हैं।

नामवर जी के व्याख्यानों में उद्धरणों की भरमार नहीं रहती, व्याख्यान देते समय रचना के पोर खोलते नजर आते हैं। वे कहते हैं कि रचना में गांठे होती हैं आलोचक को उन्हीं गांठों को खोलना चाहिए। रचना का अर्थ तभी प्रकट होता है। नामवर जी ऐसा खुद करते भी हैं। इससे रचनाकार की कारस्तानियों को समझने में मदद मिलती है और साहित्य समय, समाज के संदर्भ में अपना अर्थ प्रकट करता है। आज किसी भी विषय पर बात करते हुए लोग विदेशी विद्वानों के उद्धरणों का उपयोग इतना अधिक करते हैं कि उनकी राय क्या है, पता ही नहीं चल पाती। यानी उल्टी ज्ञान में घोर आस्था के साथ मंचतोड़ू भाषण करते हैं। वक्तव्य देते हैं।

नामवर जी के फ्लैट की सीढ़िया ठीक वैसे ही हैं जैसे मुक्तिबोध की कविता में आती हैं। 'एक चढ़ना औ लुढ़कना, पुनः चढ़ना औ लुढ़कना/बांह छाती पर अनेकों घाव...' इन सीढ़ियों को चढ़ते हुए काव्य नायक के घुटने कई बार जख्मी होते हैं, हाथों-पैरों में मोच आती है। यही बात नामवरजी के जीवन पर भी लागू होती है। वह ऐसे ही सफलता की साढ़ियाँ चढ़े हैं। लुढ़काने के प्रयास किये गये। लुढ़के भी पर फिर चढ़े। और फिर ऐसा चढ़े कि जम गये शीर्ष आलोचक नामवर सिंह के रूप में। उनमें लोगों को जाँचने की अचूक क्षमता है। वह थोड़े में ही जान जानते हैं कि सामने वाले में कितनी गहराई है। इसलिए किसी से मिलने पर पहले नापते-तौलते हैं फिर बातों का सिलसिला आगे बढ़ाते हैं। यदि सही रास्ते पर बात आगे बढी/तब तो काफी देर बैठाएँगे, बहुत निजी बातें तक पूछेंगे। चिंता करेंगे। यदि नहीं जमा तो बस पानी पिलाकर कहीं जाने की बात कहकर रवाना कर देंगे। यह नामवरी स्टाइल है। नामवरजी के जाँचने के कुछ फार्मूलों का सिद्धार्थ सिंह ने संस्मरण में उल्लेख किया है। नामवरजी की बीमारी के दौरान एक विद्वान उनसे मिलने आए तो सबने सोचा कि नामवरजी का इनसे बातचीत करके थोड़ा मन अच्छा हो जायेगा पर कुछ देर बाद ही उनको विदा कर दिया। पूछने पर बताया कि वह तो उच्चारण ही गलत कर रहे थे। खैर, ऐसे

Scanned by CamScanner

असंख्य किस्से हैं। नामवरजी से बात करने में लगता है कि अपना सबकुछ जिसे अपना कहते थे वह अपने से दूर जा रहा है। वैसे वह बातचीत से पहले आपको सामान्य करने का प्रयास करते हैं। कैसे आए हो, आने में ज्यादा दिक्कत तो नहीं हुई आदि बातें पूछते हैं, पानी लाकर खुद देते रहे हैं। (अब यह नहीं कर पाते।) कहीं भी बड़प्पन का बोझ नहीं लादते। सहज हो जाने के बाद पढ़ाई-लिखाई के बारे में पूछेंगे। समझाते हैं कि कैसे साहित्य को पढ़ना चाहिए, कौन सी किताब आपके काम की हो सकती है। जिस विषय पर काम कर रहे हो उसका क्या महत्त्व है? ऐसे न जाने कितनी बातें वह बताते रहते हैं, कई सारे किताबों के नाम प्रकाशन के साथ बताते हैं। सबकुछ मुँहजबानी चलता है, बीच-बीच में गालिब के शेर और कविताएँ। हर तरह से आप समृद्ध होते हैं। अगर मैं यह कहूँ तो अतिशयोक्ति न होगी कि वह चलती-फिरती लाइब्रेरी तो हैं ही साथ ही इससे भी आगे वह एक ऐसे गुरु हैं जो हर किसी को जो उनसे कुछ लेना चाहता है, उसे गढ़ते हैं। नई पीढ़ी में संभावनाएँ खोजते हैं। पता नहीं कब चमकता हीरा मिल जाए। अच्छे लेख की दाद देते हैं।

नामवर जी के फ्लैट की जब सीढ़ियाँ चढ़ रहा था तो मन में अनेक खयाल आ रहे थे, यदि आज मेरे पास कैमरा होता और कोई उसे चलाने वाला होता तो मैं सीढ़ियाँ चढ़ते हुए नामवरजी के बारे में कुछ बातें रिकार्ड करता। यह आत्मप्रचार नहीं बल्कि उनकी साधना के सामने मेरा समर्पण है। अफसोस न मेरे पास कैमरा था और न इसकी अभी होने की संभावना है। आज जिन सीढ़ियों पर चढ़कर मैं नामवरजी के फ्लैट की घंटी बजाने जा रहा था वह सीढ़ियाँ सामान्य नहीं हैं। न जाने कितने लोग इन सीढ़ियों पर चढ़कर बुलंदी पर पहुँच गये हैं, जमे हैं। इनमें कुछ तो ऐसे भी हुए हैं जो सीढ़ियाँ चढ़ने में ही यकीन करते रहे, ज्ञान की सीढ़ियाँ चढ़ने की कोशिश नहीं की। नामवरजी के छात्रों में ऐसे लोगों की संख्या ज्यादा है। इनमें कई बड़े नामचीन प्रोफेसर हैं और रहे हैं। तो कुछ दूसरे पदों पर विराजमान हैं। नामवरजी के छात्रों की लंबी फेहरिस्त है। हर छात्र अपने को नामवरजी का सबसे खास छात्र मानता है। यह बात अलग है कि नामवरजी किसे मानते हैं इसकी भी तफ्तीश की जानी चाहिए। नामवरजी ने साहित्य की सीढ़ियाँ बहुत संभलकर चढ़ी हैं। विचारों से समझौता नहीं किया है। अडिग रहे हैं। वह चाहे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से उनको निकालने की बात हो या फिर सागर विश्वविद्यालय से। झंझावातों के बीच पला-बढ़ा एक ऐसा वट-वृक्ष जिसने दम्भ के अनेक शिखरों को उनकी औकात दिखा दी। या फिर रामविलास जी की मान्यताओं के खिलाफ मुक्तिबोध का महत्त्व स्थापित करने की बात। नामवरजी ने सब कुछ कमाया है, साहित्य को जिया है, ओढ़ा-बिछाया है। आज भी यह साधना चल रही है।

> मेरा ईश्वर किसी से कमजोर है क्या?' इस वाक्य को बार-बार उछाला गया। वैसे धर्म और ईश्वर को एक मानने की परंपरा चलती रही है। लोग इस फर्क को समझना नहीं चाहते कि धर्म के खिलाफ तो बहुत से आंदोलन आपको दुनिया भर में मिलते हैं। पर ईश्वर के खिलाफ क्या कोई आंदोलन चला है?

एनडीटीवी को दिए साक्षात्कार में अमितेश जी से इस बात को कहते हैं। उस दिन भी जब फ्लैट की घंटी बजायी तो एक दीदी ने आकर गेट खोला पूछा, कहाँ से आए हो, मिलने का समय लिया था? संकोच से मैंने बताया, गोवा से आया हूँ और समय नहीं लिया। यह जानता था कि नामवरजी जी साढ़े नौ बजे के आसपास तैयार हो जाते हैं, उस समय कोई आता है तो मिलते हैं। इसके बाद वह पढ़ने बैठ जाते हैं या फिर किसी मीटिंग आदि में आते-जाते हैं। मैंने कहा मुझे बस सर को किताब देनी है। वह पहले अंदर गई फिर वहीं से आवाज दी, आ जाइए। मैंने पहुँचकर नमस्ते किया और देवेन्द्र सर का ज्ञानपीठ से प्रकाशित कहानी संग्रह 'समय बे-समय' पकड़ा दिया। देखा नामवर जी बेंत की आराम कुर्सी पर बैठे पढ़ रहे थे। मुझे लगा कि मेरे आने से सर की साधना भंग हुई लेकिन जब सर ने बातचीत की तो कहीं से भी यह आभास नहीं हुआ। आवाज में थकान थी। संग्रह के बारे में पूछा ज्ञानपीठ से प्रकाशित है, मैंने कहा 'जी'। संग्रह का अनुक्रम देखा और फिर संग्रह के बारे में बात करने लगे। कहा अगर मैं इसका नाम रखता तो 'समय-असमय' रखता। मुहावरा 'समय-असमय' होता है, या फिर 'वक्त-बेवक्त' होता है, 'समय बे-समय' नहीं। देवेन्द्र से कह देना मैंने ऐसा कहा है। इस बीच में वह दो बार मेरा नाम, कहाँ रहते हो, क्या करते हो आदि पूछा। पूछा देवेन्द्र कहाँ हैं? मैंने कहा, सर लखनऊ में। आगे मैंने जोड़ दिया सर 'शंकुतला मिश्रा यूनीवर्सिटी' में पढ़ा रहे हैं। यह बात सुनकर कहा, जानता हूँ। ऐसा लगा सर को लखनऊ सुनकर ही देवेन्द्र सर के बारे में सब याद हो आया। मुझे लगा वह यह भी कहना चाहते हैं ऐसा मत समझना मैं भूल रहा हूँ, मुझे याद है। कहा मैं गोवा कई बार गया हूँ तब यूनीवर्सिटी नहीं थी। मैंने कहा कि आपकी कई छवियाँ वहाँ के अल्बमों में सुरक्षित हैं। मैं जान रहा था कि यह बात सही नहीं है। नामवरजी गोवा विश्वविद्यालय बनने के बाद विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठियों और पीएच.डी. मौखिकी में आए हैं फिर भी बोलना उचित नहीं लगा। इसके बाद नामवरजी की नजर बिस्तर पर रखे 'संवेद' पत्रिका के 'अमृतलाल नागर केन्द्रित अंक' पर गई। पूछा यह क्या लाए हो, मैंने बताया 'संवेद' पत्रिका का अमृतलाल नागर पर केन्द्रित विशेषांक आया है। हाथ में लिया, उलटते-पुलटते रहे कहा, यह बहुत अच्छा किया है। कहा, पत्रिका पर अपना नाम और मोबाइल नंबर लिख दो। फिर कहानी संग्रह पर लिख दो, मैंने कहा, यह देवेन्द्र सर का है। उन्होंने कहा, कोई बात नहीं, तुम देने आए हो, तो बाद में याद रहेगा। अमृतलाल नागरजी पर 'संवेद' पत्रिका का जो विमोचन कार्यक्रम लखनऊ में हुआ उसके बारे में बताया, सुनते रहे। मैंने बड़े संकोच के साथ पूछा, सर! आपकी एक फोटो ले लें, वे बोले, ले लो। तब तक गेट खोलने के लिए जो दीदी आई थीं, उन्होंने कमरे में आकर पूछा, पानी पियेंगे, मैंने कहा, जी। नामवरजी ने कहा, 'अरे गर्मी के मौसम में यह भी कोई पूछने की बात है। पानी तो खूब पीना चाहिए।' मैंने पानी पिया।

इसके पहले जितनी बार नामवरजी के यहाँ गया तो सर ने धीरे-धीरे कदमों से चलते हुए पानी लाकर दिया था। आज वही नामवर जी! ऐसा लग रहा था आजू-बाजू से एक-एक कर हिमालय की चट्टानें दरकने लगी हैं। मैं एकटक देख रहा था, आँखें डबडबाने लगीं। जब तक पानी आया मैंने नामवर जी का फोटो लिया और एक फोटो सर की बिना इजाजत के भी लिया जिसमें वह 'संवेद' का अमृतलाल नागर केन्द्रित अंक पढ़ रहे हैं और गोद में 'समय बे-समय' कहानी संग्रह रखा हुआ है। जब नामवरजी के फ्लैट से निकला तो मन भारी था।

Scanned by CamScanner